भारतीय समकालीन चित्रकला में कला–समीक्षकों की भूमिका

रूबी चौधरी
रूबी चौधरी
(शोध छात्रा)

सारांशः–वर्तमान युग में जिस तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। मानव के सामाजिक मूल्यों, सोच व्यवहार आदि सब कुछ बदल रहा है, फिर कला इन सबसे कैसे अछूती रह सकती है। समकालीन कला भी इसी बदलाव का परिणाम हैं विज्ञान ने हमें जो नये साधन विधियां प्रदान की है उन्हीं का प्रयोग आज की कला में बखूबी किया जा रहा है जिससे कला विभिन्न रूपों में प्रकट हुई है। भूत और वर्तमान के अनुभवों से कलाकारों की सोच व कौशल परिवर्तित होते रहे है जिसका प्रभाव उनके कार्य पर भी साफ तौर पर देखा जा सकता है। यह अविरल कला की धारा आज इस मोड़ पर पहुँची है जहाँ कल्पना की उड़ान परम्परागत सीमा को लांघकर ऐसी कला को जन्म देती है जो अद्‌भुत है, रोमाचंक है, नवीन है तथा मन में असंख्यक सुलझे–अनसुलझे प्रश्न खड़े कर देने वाली साथ ही साथ यह समकालीन कला अत्यधिक प्रयोगशील है, मनोवैज्ञानिक है।

कला समीक्षा की उल्लेखनीय पहलः– समकालीन कला में रूढ़िवादी परम्परा के स्थान पर बौद्धिकता व तर्क को प्राथमिकता मिली तथा इसके साथ ही कलाकार भी इतना सशक्त बन गया कि वह किसी भी रूप में विषय, माध्यम, तकनीक, तरीके, अवधारणाएं आदि का प्रयोग करने लगा। यह एक सकारात्मक बात है कि कलाकार अपनी सोच का दायरा बढ़ा रहा है तथा निसंकोच होकर कार्य कर रहा है। दूसरी ओर कुछ कलाकार ऐसे भी है जो कला में विषयवस्तु तथा धारणाओं के नाम पर नकारात्मक चित्रण करने से भी नहीं हिचकिचाते। आधुनिकता को माध्यम बनाकर कुछ कलाकार अपनी सोच से लोगों को भ्रमित करने का कार्य भी करते है। कृतियों में उत्तेजनात्मक चित्रण, लिंग भेदों पर चित्रण, ग्रामीण परिवेष को दयनीय दर्शाना इत्यादि अनेक ऐसे विषयों पर चित्रण किया जाता है जो मानवता पर नकारात्मक प्रभाव डालने के लिए काफी है। समकालीन कला में हो रहे इन सकारात्मक व नकारात्मक बदलावों का आकलन करने के लिए कला समीक्षा व कला समीक्षकों की आवश्यकता है जो कि वर्तमान समय में बहुत ही कम स्तर पर है। कलाकृतियों के गुण व अवगुण बताने के लिए कला समीक्षकों की भूमिका अहम् है। कुछ कलाकारों का मानना है कि कला समीक्षकों द्वारा कलाकृतियों व कलाकारों पर दी गई राय या विचार सदैव नकारात्मक ही होते है किन्तु यह पूर्ण सत्य नहीं है। कला समीक्षक अपने अनुभव व समाज की सोच को साथ लेकर चलता है तभी वह इसकी व्याख्या कर पाता है कि किस कलाकार व कलाकृति का मानवजाति पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह कला के दायरे को बढ़ाता है तथा समाज के लोगो को कलाकार व कलाकृतियों के प्रति जागरूक करता है उन्हें कलाकृतियों को अच्छे से समझने में सहायता करता है, या यूँ कहें कि कलाकार व आम मानव जाति के बीच की कड़ी कला–समीक्षक ही होता है। वह विश्व के समक्ष कलाकार व कलाकृतियों की वर्तमान परिवेश में कलाकार व कलाओं की उपादेयता प्रस्तुत करने में कला–समीक्षकों का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कला संस्कृति को समाज में महत्वपूर्ण सम्मानजनक स्थान दिलाने में प्रारम्भ से ही कला समीक्षकों की अहम् भूमिका है।

कला समीक्षा का बदलता स्वरूपः– परिवर्तन संसार का नियम है जो अनवरत रूप से अल्पकालिक संसार को नये आयाम प्रदान कर, मानव जाति के अस्तित्व को सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण से प्रभावित करता है, यह सार्वभौमिक सत्य है। कलाकार अपने सृजनात्मक प्रयासों तथा अन्तः चेतना से संचालित होकर विभिन्न माध्यमो से समाज को अवगत कराने का प्रयास करता हैं। समकालीन कलाकार वर्तमान की चिन्ताओं को सामने लाकर मानव जाति के लिये जीवन को व्यक्त करने की तरफ ज्यादा ध्यान देने लगे हैं, जो कलाकर्म के लिये शुभ हैं। आज की समकालीन कला में अराजकता, कोतूहल, निशृंसता, निस्सहायता, अकिंन्चनता और तत्कालिक समाज की दुर्बलता की अभिव्यक्ति अधिक हो रही हैं, जिसे कलाकार दैनन्दित घटनाओं, प्राकृतिक और पर्यावरणीय असुन्तलन, सामाजिक – राजनीतिक समस्याओं तथा उससे प्रभावित मानव जीवन, वैचारिक कटटर पंथ आदि में देखता हैं। देश की समस्याओं से अवगत कराती हुई समकालीन कलाकारों की कृतियां कला जगत की उपलब्धि का प्रमाण हैं और अपने समय के परिवर्तन पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी भी हैं। कला का अपने समाज में होने वाली घटनाओं की साक्षी भी हैं। जो उन कलाकारों के लिये प्रेरणा की तरह हैं, जिनके लिये कला का आशय समाज से दूर रहना कदापि नहीं हैं। दूसरी ओर इसके विपरीत समकालीन कला के कुछ कलाकारों ने कला को एक बाजार की वस्तु बना दिया हैं, ऐसे कलाकार बाजार की मांग और पूर्ति के नियमों पर काम करते हैं। जिनकी दृष्टि में कला की दृष्टि सामाजिक उपादेयता ना के बराबर होती हैं। बावजूद इसके, ऐसे कलाकार भी हैं, जिन्हें यह पता हैं कि उनकी सर्जन की उपयोगिता समाज में होने वाले परिवर्तनों को देखने और उन्हें रचने में हैं।

समीक्षकों के प्रति जागरूकता का अभावः– भारतीय कला पर समीक्षकों द्वारा समय–समय पर लेख लिखे गये हैं किन्तु जितना उन्हें प्रोत्साहन मिलना चाहिए था वह नहीं मिला, फिर भी कुछ प्रसिद्ध नाम है जिनमें ए. के. कुमारस्वामी, एस.ए. कृश्णन, जगदीश स्वामीनाथन, निजिम एजीकील, रिचर्ड बारथोलोमयू, जया अप्पास्वामी, स्टैला क्रैमरिच, ओ.सी. गांगुली, सी. सिवारमामूर्ति इत्यादि। समकालीन कला

को समझाने के लिये कदाचित आलोचकों की कमी खटकती हैं। यद्यपि देश के प्रमुख शहरों में आलोचकों का एक वर्ग विकसित हुआ हैं। लेकिन उनका लेखन कार्य अंग्रेजी माध्यम में होता हैं जिनमें गीता कपूर, गायत्री सिन्हा, इना पुरी, डॉ0 अल्का रघुवंशी, उमा नायर, जॉनी एम. एल, गिरिश सहाने, तसनीम जकारिया मेहता, भानय झावेरी, नमन आहुजा, रंजीत हसखोटे, रूपिका चावला इत्यादि। अंग्रेजी के साथ क्षेत्रीय भाषाओं के भी आलोचक होने चाहिये, अभी भी हिन्दी में अशोक वाजपेयी, प्रयाग शुक्ल एवं विनोद भरद्वाज एवं डॉ0 शुक्ल ज्योतिश जोशी के ही नाम प्रमुख हैं, बहुत कम ऐसे समीक्षक हैं, जो सदैव लिखते हैं। इनके अतिरिक्त राजेश कुमार शुक्ल, डॉ0 अन्नपूर्णा शुक्ला, जगतार जीत, जगदीश चन्द्रिकेश, अवधेश अमन, उमेश मिश्र, वेद प्रकाश भारद्वाज, मनसिज मजूमदार इत्यादि ऐसे कला समीक्षक है जो कि दोनों माध्यमों में लिखते है, परन्तु आज भी समाज का बहुत बड़ा वर्ग कलाकारों व कलाकृतियों से अनभिज्ञ है, तो कला समीक्षा व समीक्षकों के बारे में जानना बहुत दूर की बात रही। अनेक स्थानों पर कला की प्रासंगिकता पर सवाल पैदा होते हैं, विशेष तौर पर छोटे शहरों में अभी भी समकालीन कला के विषय में भ्रान्तियां विद्यमान हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इतने वर्षो का अध्ययन एवं पठन–पाठन भी इस क्रम को तोड़ता नहीं दिखता। कला को सामाजिक मान्यता मिलना आवश्यक हैं। मान्यताओं के लिये कलाकारों का प्रयास तब तक पूर्ण नहीं होगा, जब तक कि आलोचकों का पर्याप्त प्रयास नही रहेगा। प्रख्यात कला समीक्षकों के विचारः– प्रख्यात कला समीक्षक डॉ0 अवधेश मिश्र के अनुसार "हम कलाकारों का धर्म यह भी हैं कि समाज के उस पक्ष से ही प्रभावित न हो, जो केवल सौन्दर्य बोध से जुड़ा हैं, बल्कि जनजीवन की और समस्याओं, उनके अभावों को भी हम रचना व लेखन विषय बनायें और उस पक्ष को समाज के आम वर्गो के सामने लायें। वरिष्ठ कलाकार एवं कला समीक्षक अशोक भौमिक ने बड़ी ही मौलिक और गम्भीर बात कही है, जहां वह आस पास के जीवन और समस्याओं, संघर्षो को कला में सिरे से गायब होने की बात करते हैं, वहीं पुनरावृति को भी बड़ी और बाजार के दबाव से उपजी हुई समस्या मानते हैं।"

गीता कपूर तथा आर शिवकुमार जैसे कला समीक्षकों के अनुसार "कलाकार ने कला को अधिक गम्भीरता से लेना प्रारम्भ कर दिया है फिर चाहे उसे सीखने का माध्यम हिन्दी हो या अग्रेंजी"। सन् 1990 के दशक के बाद देश का आर्थिक उदारीकरण होने के साथ–साथ भारतीय कला को भी बढ़ावा मिला। विभिन्न नई शैलियों का निर्माण किया। इस प्रकार उत्तर उदारीकरण के कारण भारतीय कला केवल शौक्षणिक परम्पराओं के भीतर न रहकर बाहर भी निकल चुकी थी।'' वेदप्रकाश भारद्वाज ने समकालीन कला के अंक 25 में यह बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार समकालीन भारतीय कला में नए कलाकार पश्चिम कला से प्रभावित दिखते है वहीं पुराने कलाकारों ने अपने समय के महान् कलाकारों से प्रेरणा ली है, अलबत्ता उनमें से कुछ ने जहां उनके पदचिन्हों का अनुसरण किया है तो कुछ ने उनके सीधे–सीधे प्रभाव को एक नई कलाकृति में बदल दिया है। कलाकार युसुफ के अनुसार ''भारत में कला लेखन की स्थिति बहुत अच्छी तो नही है इसके बहुत से कारण है, उस पर भी बाजार के प्रभाव ने और गाज गिरा दी है। कुछ कला समीक्षक तो उचित मूल्य के अभाव में किसी कलाकार का चाहे कितना भी अच्छा या बुरा काम हो, लिखने में हिचकिचाते है। हिन्दी कला समीक्षा में समुचित दृष्टि का भी अभाव दिखता है। इस ओर कला संस्थाओं को भी ध्यान देना चाहिए और बाजार के प्रभाव से कलाकार और कला–समीक्षक दोनों को बचना चाहिए।''

प्रसिद्ध कला समीक्षक डॉ0 राजेश कुमार व्यास के अनुसार ''ऐसे दौर में जब कला निरन्तर बाजार की वस्तु बनती जा रही है, यह बेहद महत्वपूर्ण है कि कलाकृतियों का मूल्यांकन उनमें निहित कला की गम्भीरता के आधार पर किया जाए। यह इसलिए भी जरूरी है कि इसी से कला सामाजिक सरोकारों से जुड़ पाएगी।'' प्रख्यात कला समीक्षक सुशमा बहल ने कलाकार राजेश शर्मा के काष्ठशिल्पों का इतनी काष्ठ सृजनात्मकता के साथ व्याख्यान किया है जो कि आमजन को आसानी से समझ में आ सके। उनके द्वारा बनाए गए काष्ठशिल्पों को सुशमा जी ने बहुत ही मौलिकता के साथ वर्णित किया है तथा किस प्रकार उनकी कलाकृतियाँ समाज के प्रति जागरूकता लाती हैं उसका भी वर्णन भली–भाँति किया गया है।

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षा व समीक्षकों पर एकमात्र ललित कला अकादमी द्वारा प्रकाशित अंकों में ही कला समीक्षकों, कलाकारों व उनकी कृतियों पर समीक्षा बहुत ही सीमित लेखन में उपलब्ध है जिसके कारण वर्तमान में नए कलाकारों व कला विद्यार्थियों तक यह नहीं पहुँच सकी है। इसी कारण वर्तमान में कला समीक्षा व समीक्षकों के बारे में बहुत कम लोग जागरूक है जो कि कला के हित में नहीं है। प्रस्तुत लघु लेख का उददे्श्य यही है कि जिस प्रकार कलाकारों, कलाकृतियों व कला के क्षेत्र में हो रही गतिविधियों के प्रति लोगों में जागरूकता आयी है, उसी प्रकार इन कलाकारों, कलाकृतियों का उचित मूल्यांकन करने वाले कला–समीक्षकों के प्रति भी लोग जागरूक होने चाहिए ताकि कला का मूल्यांकन करने वाले कला–समीक्षकों को भी उचित सम्मान व ख्याति मिल सके।

सन्दर्भ–सूचीः–

1. अग्रवाल, गिर्राज किशोर, भारतीय आधुनिक चित्रकला, संजय पब्लिकेशन, आगरा, 2002.
2. जोशी, डॉ0 ज्योतिष, समकालीन कला, ललित कला अकादमी, अंक–35 मार्च–जून–2008.
3. भारद्वाज, विनोद, बृहद आधुनिक कला कोष, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
4. विरंजन, राम, समकालीन भारतीय कला, निर्मल बुक एजेन्सी, कुरूक्षेत्र, 2003
5. जौहरी, डॉ0 रितु, भारतीय कला समीक्षा (विचार व रूप), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2013
6. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, अंक–25, नवम्बर 2004–फरवरी 2005, पृष्ठ– 61,57,53
7. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, अंक–28, नवम्बर 2005–फरवरी 2006, पृश्ठ– 69,70
8. कला दीर्घा–दृश्य कला की अर्न्तदेशीय पत्रिका, अंक–23, अक्टूबर 2011 टवस.12.
9. कला दीर्घा–समकालीन कला का विकास, अंक–21, अक्टूबर 2010 टवस.11.
10. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, प्रवेशांक–1982
11. समकालीन कला, ललित कला अकादमी अंक–27, जुलाई–अक्टूबर 2005
12. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, अंक–48, फरवरी– 2016